# NATIONAL SEMINAR REPORT

**ON**

# India's Cyber Security: Challenges and Options

**10th & 11th December, 2022**

***Sponsored by***

**Indian Council of Social Science Research, New Delhi**

***Organized by***

**Department of Defence and Strategic Studies**

**D.A-V. College, Kanpur**

**Patron :** **Kumkum Swarup,**
Secretary Board of Management,
D.A-V. College, Kanpur

**Principal & Convenor : Prof. Arun Kumar Dixit,**
D.A-V. College, Kanpur

**Organizing Secretary : Prof. Vinod Mohan Mishra,**
Dept. of Defence & Strategic Studies,
D.A-V. College, Kanpur

***(Affiliated with Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur, Uttar Pradesh)***

# राष्ट्रीय संगोष्ठी आख्या

आई.सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली,
द्वारा वित पोषित
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, डी. ए–वी. कालेज, कानपुर
द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
10–11 दिसम्बर, 2022

**शीर्षक :– ''भारत की साइबर सुरक्षाः चुनौतियाँ एवं विकल्प''**

आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में दिनांक 10 दिसंबर, 2022 को डी.ए–वी. कॉलेज, कानपुर के रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित तथा आई.सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित एवम वित्तपोषित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, शीर्षक ''भारत की साइबर सुरक्षाः चुनौतियाँ एवं विकल्प'' (India's Cyber Security: Challenges and Options) के उद्घाटन सत्र का प्रारम्भ महाविद्यालय के सभागार मे प्रातः 10:00 बजे प्रारम्भ किया गया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. वी.के. दुबे द्वारा किया गया। इस सत्र के अध्यक्ष के रूप में श्रीमती अनंता स्वरूप, वरिष्ठ सदस्य, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट, डी.ए–वी. कॉलेज, कानपुर, मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति बी. एन. श्रीकृष्णा, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. आर.के. द्विवेदी, डायरेक्टर, सी.डी.सी., सी.एस. जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर, सेमिनार के समन्वयक एवं प्राचार्य प्रो. अरुण कुमार दीक्षित, डी.ए–वी. कॉलेज, कानपुर के साथ इस राष्ट्रीय सेमिनार की आयोजन सचिव प्रो. विनोद मोहन मिश्र मंचासीन हुए। कार्यक्रम की शुरुआत माननीय अतिथियों द्वारा सरस्वती जी के समक्ष दीप प्रज्वलन कर किया गया। सरस्वती वंदना की प्रस्तुति डॉ श्रुति श्रीवास्तव द्वारा की गई, तत्पश्चात अतिथियों का स्वागत उदबोधन प्रो. अरुण कुमार दीक्षित, प्राचार्य डी.ए–वी. कॉलेज द्वारा किया गया। इस क्रम में संगोष्ठी से संबंधित संपादित पुस्तक ''India's Cyber Security: Challenges and Options'' एवं स्मारिका का विमोचन सम्मानित मंच द्वारा किया गया। आयोजन सचिव प्रो. विनोद मोहन मिश्र द्वारा इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का कॉन्सेप्ट नोट पढ़ा गया, जिसमें उन्होंने बताया की मनुष्य ने हमेशा प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण प्रदेशों की खोज और विकास करने की कोशिश की है, जमीन पर बस्तियां बनाने से लेकर महासागरों में यात्रा करने तक, बाह्य अंतरिक्ष पर आक्रमण करने व जीतने के लिए हमेशा

प्रयासरत रहा है। आज भारत, साइबर सुरक्षा के क्षेत्र मे अपनी शैशवावस्था से युवावस्था की ओर बढ़ रहा है और इस क्षेत्र मे प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर है। मुख्य व्याख्यान मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति बी. एन. श्रीकृष्णा द्वारा दिया गया। जिसमें उन्होंने बताया कि साइबर अपराधों की अधिकता होने के कारण विधि विज्ञान की भूमिका बढ़ जाती है, आज भारतीय दण्ड संहिता में नए कानूनों की समाहित करने की आवश्यकता तीव्र गति से बढ़ रही है। सदस्य, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट, श्रीमती अनंता स्वरूप ने अपने उदबोधन मे रक्षा एवम स्त्रातेजिक अध्ययन  विभाग तथा महाविद्यालय परिवार को इस आयोजन की बधाई देते हुये सभी प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनायें दी। सत्र के अंत में संगोष्ठी के समन्वयक एवं प्राचार्य प्रो. अरुण कुमार दीक्षित द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

**माननीय अतिथियों द्वारा सरस्वती जी के समक्ष दीप प्रज्वलन**

**सम्मानित मंच द्वारा स्मारिका एवं पुस्तक का विमोचन**

**प्रथम तकनीकी सत्र**

प्रथम तकनीकी सत्र अपरान्ह 12:00 बजे महाविद्यालय के सभागार मे प्रारम्भ किया गया। मुख्य थीम ''Need for strengthening India's Cyber Security in Contemporary world'' और ''Cyber Security & Data Privacy: Emerging Issues and Challenges'' पर आधारित इस तकनीकी सत्र की शुरुआत  सत्र के अध्यक्ष माननीय न्यायमूर्ति बी. एन. श्रीकृष्णा द्वारा की गई। प्रमुख वक्ता डॉ. के. ए. पाण्डेय, सह–आचार्य, विधि विभाग, डॉ. राम मनोहर लोहिया नेशनल लॉ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने अपने उदबोधन में बताया गया कि आज साइबर खतरा, राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गैर पारंपरिक

खतरे का एक नया आयाम है, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन को इतनी तेजी से बदल दिया है कि कोई भी बिना कंप्यूटर के दैनिक जीवन की कल्पना नहीं कर सकता है। दूसरे मुख्य वक्ता के रूप मे डॉ अशोक पी. वाडजे, कुलसचिव एवं सह–आचार्य, विधि विभाग, महाराष्ट्र नेशनल लॉ विश्वविद्यालय, औरंगाबाद द्वारा बताया गया कि तकनीकी रूप से संचालित और सूचना–आधारित समाज में, व्यक्तियों, व्यावसायिक उद्यमों और सरकारी मशीनरी के लिए तकनीक–प्रेमी और साइबरस्पेस के पारिस्थितिकी तंत्र से अच्छी तरह परिचित होना अनिवार्य है। इस तकनीकी सत्र में मुख्य रूप से डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी, श्री अवनीश पांडे, डॉ अरविंद कुशवाहा (ऑनलाइन) सहित अनेक शोधर्थियों द्वारा संबंधित विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

माननीय न्यायमूर्ति बी. एन. श्रीकृष्णा द्वारा सत्र की अध्यक्षता

प्रमुख वक्ता डॉ. के. ए. पाण्डेय

## द्वितीय तकनीकी सत्र

द्वितीय तकनीकी सत्र अपराह्न 3:00 बजे महाविद्यालय के सभागार मे प्रारम्भ किया गया। मुख्य थीम ''The need of cyber and information technology for the development of India'' और ''The Future of Cyber and Information Technology in India'' पर आधारित इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर.के. द्विवेदी, डायरेक्टर, सी.डी.सी. सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा की गयी उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि साइबर दुनिया कंप्यूटर और इंटरनेट के वैश्विक नेटवर्क से बना है, इनकी सीमायें वास्तविक दुनिया के विपरीत हैं, साइबर स्पेस एक आभासी स्थान है, इसमें प्रवेश और उपयोग दुनिया में कहीं से भी किया जा सकता है। साइबर स्पेस ब्रह्मांड इतना विशाल है, कि कोई भी या तो किसी और की पहचान जान सकता है या अपनी पहचान छुपाने के लिए इसका इस्तेमाल कर सकता है। इस कारण से हमें तत्काल आईटी अवसंरचना

को सुरक्षित करने की आवश्यकता है। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ विश्व कल्याण दास, नेशनल फोरेंसिक्स साइंसेज विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात द्वारा बताया की ''गोपनीयता'' की अवधारणा को परिभाषा के कठोर शब्दों में वर्णित करना बहुत कठिन है क्योंकि यह एक समकालीन अनुशासन है, इसलिए इसे एक आयामी दृष्टिकोण के रूप में नहीं समझा जा सकता है। निजता का अधिकार हर व्यक्ति के जीवन के साथ संपर्क, प्रारंभिक चरण में हमारे भारत के संविधान ने निजता के स्पष्ट अधिकार को मान्यता नहीं दी, बल्कि इसे एक सामूहिक अधिकार के रूप में रेखांकित किया है। दूसरे मुख्य वक्ता के रूप मे इंजी. हर्ष तोमर, इन्फोसिस लिमिटेड, बंगलुरु द्वारा बताया गया कि भारत अपने बिजली ग्रिड, वित्तीय संस्थानों, एकीकृत पासपोर्ट पंजीकरण सेवाओं (आखिरी हमला 25 जुलाई को हुआ था), और नागरिकों की पहचान पर साइबर हमले सहित कई साइबर सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहा है। वास्तव में, हाल ही में, विवाह पंजीकरण, मृत्यु और जन्म प्रमाण पत्र, भूमि रिकॉर्ड, और बिजली आपूर्ति सेवाओं जैसे सार्वजनिक सेवा से संबंधित साइबर सुरक्षा संरचना पर भी हमले हुए हैं। इस प्रकार के हमलों ने मुख्य रूप से चीन और अन्य देशों के संबंध में भारत की चिंताओं को बढ़ा दिया है जो साइबर सुरक्षा से संबंधित अपने स्वयं के मानदंड बनाने की कोशिश कर रहे हैं। भारत अपनी साइबर सुरक्षा रणनीति लाने के लिए काम कर रहा है और इसलिए वह सभी विकासशील देशों से इनपुट लेना चाहता है ताकि भविष्य की कार्ययोजना और खाका तय किया जा सके। इस तकनीकी सत्र में अंजली दीक्षित, सारिका श्रीवास्तव, अखिलेश मिश्र, राहुल वानखेड़े (ऑनलाइन) सहित अनेक शोधर्थियों द्वारा संबंधित थीम पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

**प्रो. आर.के. द्विवेदी, द्वारा सत्र की अध्यक्षता**

**मुख्य वक्ता के रूप में डॉ विश्व कल्याण दास,**

## दिनांक 11 दिसम्बर 2022

### तृतीय तकनीकी सत्र

डी.ए–वी. कॉलेज के प्रांगण में हो रहे दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार 'India's Cyber Security: Challenges and Options' के दूसरे दिन प्रातः 10:00 बजे तृतीय तकनीकी सत्र का शुभारंभ महाविद्यालय के सभागार मे हुआ। सत्र का प्रारम्भ प्रो. वी.के.दुबे द्वारा अतिथियों का स्वागत उद्‌बोधन द्वारा किया गया। इस तकनीकी सत्र की अध्यक्षता आई.पी. एस. श्री आनंद वर्धन शुक्ला (से.नि.) प्रो–वी.सी. मेवाढ विश्वविद्यालय, राजस्थान द्वारा की गयी। इस तकनीकी सत्र की प्रथम मुख्य वक्ता प्रो देवरती हलधर, पारुल इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ, पारुल विश्वविद्यालय गुजरात द्वारा अपने प्रस्तुति मे बताया की साइबर अपराधों में अधिकतर महिलाएं शिकार हो रही हैं इस हेतु कड़े कानून बनाने की आवश्यकता है.... इस सत्र की दूसरी मुख्य वक्ता डॉ. बबली, सहायक आचार्य, कंप्यूटर अनुप्रयोग विभाग, इंटीग्रल यूनिवर्सिटी, लखनऊ द्वारा बताया गया की आधुनिक, तकनीकी रूप से उन्नत समाज डिजिटल जीवन के इर्द–गिर्द केंद्रित है, जो लोगों को पहले से अधिक साइबर अपराध के खतरे में डाल रहा है। साइबर अपराध ने कुछ लोगों या व्यवसायों के लिए संभावित खतरों के लिए द्वार खोल दिये है, जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण वित्तीय क्षति हुई है। संवेदनशील और गुप्त डेटा की सुरक्षा के लिए साइबर सुरक्षा को शामिल करने के लिए तकनीकी दुनिया बदल गई है। साइबर सुरक्षा एक ऐसी तकनीक है, जिसका उपयोग नेटवर्क, सर्वर, कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स, मोबाइल डिवाइस और डेटा की सुरक्षा के लिए किया जाता है। बिजली के उपकरणों को ऑनलाइन हमलावरों से बचाने के लिए साइबर सुरक्षा का भी उपयोग किया गया है। दुर्भावनापूर्ण हमलावरों द्वारा महत्वपूर्ण सामग्री को हटा दिया गया, स्थानांतरित कर दिया गया, या लीक कर दिया गया, जिससे व्यवसायों, संगठनों या विशेष लोगों के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया। इस तकनीकी सत्र में राहुल वानखेढ़े, मोनोजीत दास, नेहा मिश्रा, नीलेश वर्मा सहित अनेक शोधर्थियों द्वारा संबंधित विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

**श्री आनंद वर्धन शुक्ला द्वारा सत्र की अध्यक्षता** **मुख्य वक्ता डॉ. बबली,**

## चतुर्थ तकनीकी सत्र

चतुर्थ तकनीकी सत्र का शुभारंभ 12:00 बजे महाविद्यालय के सभागार मे हुआ। सत्र का प्रारम्भ डॉ. अमरेन्द्र प्रताप गोंड द्वारा अतिथियों का स्वागत उद्बोधन द्वारा किया गया। इस तकनीकी सत्र की अध्यक्षता मेजर जन. (डॉ) अशोक कुमार (वी.एस.एम) द्वारा की गयी। मुख्य वक्ता के रूप मे प्रो सुरेन्द्र मिश्रा पूर्व प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय हिसार द्वारा बताया गया की बड़ी तेजी से बदलती दुनिया में जहां आज अधिकांश काम डिजिटल माध्यम से होता है, वहां इस बात का एक भय भी हमेशा सताता रहता है कि कहीं उसके साथ ऑनलाइन फ्रॉड या धोखाधड़ी न हो जाये। क्षण भर के लिए मोबाइल काल आने के अन्दर ही आपका बैंक खाता कुछ ही क्षण में खाली किया जा सकता है। अब आये दिन ऐसी घटनायें घटित हो रही हैं और आश्चर्य की बात है कि इस मामले में कार्यवाही बेहद सतही स्तर पर हो रही है। यहां तक की आर्थिक रिकवरी की दर भी तुलनात्मक दृष्टिकोण से बेहद कम है। एक जानकारी के आधार पर इस वर्ष दिवाली के अवसर पर देश भर के ग्राहकों को साइबर धोखाधड़ी के माध्यम से खूब ठगा गया। इसकी जांच–पड़ताल साइबर सिक्योरिटी के ग्लोबल लीडर की पहचान रखने वाले नार्टन की ओर से 'दि हैरिस पोल' नाम की संस्था द्वारा की गयी। त्योहारों के समय ऑनलाइन घर की जरूरतों वाले सामान की खरीददारी करने वाले के बारे में अध्ययन व विश्लेषण किया। नवीन और विकसित साइबर सुरक्षा खतरों के एक मेजबान में सूचना सुरक्षा उद्योग हाई अलर्ट पर आंका जा रहा है। मैलवेयर, फिशिंग मशीन, लर्निंग, आर्टिफिशियल इण्टेलीजेन्स (ए.आई.) क्रिप्टो करेन्सी और अधिक से अधिक परिष्कृत साइबर हमलों ने इस समय विशेष रूप से निगमों, सरकारों, व्यक्तियों के व्यक्तिगत डाटा और सम्पत्ति के संकट में डाल दिया है। इस तकनीकी सत्र में डॉ शुभ्रांशु शेखर सिंह, आलोक

रंजन, आमिर, रोहित कुमार सहित अनेक शोधर्थियों द्वारा संबंधित विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

**मे0ज0 (डॉ) अशोक कुमार द्वारा सत्र की अध्यक्षता  मुख्य वक्ता के रूप मे प्रो सुरेन्द्र मिश्रा**

**समापन सत्र –**

रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग  डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन सत्र का शुभारंभ 2:00 बजे महाविद्यालय के सभागार हुआ। इस सत्र मे मुख्य अतिथि के रूप मे आई.पी.एस. श्री आनंद वर्धन शुक्ला (से.नि.) प्रो . वी.सी. मेवाढ विश्वविद्यालय, राजस्थान, सत्र की अध्यक्षता मेजर जन. (डॉ) अशोक कुमार (वी.एस. एम)  द्वारा की गयी।  संगोष्ठी समन्वयक व प्राचार्य प्रो. अरुण कुमार दीक्षित व संगोष्ठी सचिव प्रो. विनोद मोहन मिश्रा  विभागाध्यक्ष प्रो. एन पी तिवारी द्वारा मंच सुसज्जित हुआ। इस कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ दिवाकर पटेल द्वारा का स्वागत उद्बोधन द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि आई.पी.एस. श्री आनंद वर्धन शुक्ला (से.नि.) द्वारा अपने सम्बोधन मे बताया की आज के समय में डिजिटलीकरण इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है की कोई भी राष्ट्र यह निर्णय नही कर रहा है की कल का भविष्य क्या होगा, बढ़ती डिजिटलीकरण विश्व व्यवस्था की कार्य क्षमता  के कारण  ही गतिशील मुद्रा बदल रही है जो अब निजी खिलाड़ियों को प्रमुख अभिनेता बनने और काम काज को प्रभावित करने की अनुमति दे रहा है जो कभी राष्ट्र के लिए विशेष रूपसे आरक्षित था। आज मुट्ठीभर वैश्विक प्रौद्योगिकी दिग्गज डेटा के भाग्य को नियंत्रित करते हैं, जिसे एक स्वतंत्र इकाई के रूप में माना जाता था, जिसके पास एक मुक्त पथ में यातायात करने का विशेषाधिकार था। आज डेटा या सूचना का प्रवाह क्षेत्रीय राजनीति और क्षेत्रीय संप्रभुता के आधार पर तय किया जाता है। सत्र के

अध्यक्ष मेजर जन. (डॉ) अशोक कुमार (वी.एस.एम) द्वारा बताया गया की राष्ट्रीय सुरक्षा किसी राष्ट्र के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। पिछले कुछ वर्षों में, राष्ट्रीय सुरक्षा का मतलब बड़े पैमाने पर सैन्य हमलों से सुरक्षा था, चाहे वह जमीन पर, हवा में या समुद्र में हो। जैसे–जैसे राष्ट्रों का विकास हुआ और विभिन्न क्षेत्रों में क्षमताओं का निर्माण हुआ वैसे ही खतरों की प्रकृति भी बदल गई। पारंपरिक सैन्य खतरे के अलावा साइबर सुरक्षा, पर्यावरण सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा, आतंकवाद के क्षेत्रों में कई और खतरे उभर रहे हैं। ये खतरे संपूर्ण खतरे नहीं है इसके अतिरिक्त कई और भी हैं। सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली खतरा अब साइबर खतरा है, यह अपने आप में अन्य सभी खतरों की प्रभावशीलता को कई गुना बढ़ा देता है। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की विस्तृत विवरण आयोजन सचिव प्रो विनोद मोहन मिश्रा द्वारा प्रस्तुत किया। अंत में कॉलेज के प्राचार्य प्रो. अरुण कुमार दीक्षित द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करते हुये संगोष्ठी का समापन राष्ट्रगान द्वारा किया गया।

**प्राचार्य प्रो. अरुण कुमार दीक्षित द्वारा धन्यवाद ज्ञापन, राष्ट्रगान द्वारा संगोष्ठी का समापन**

राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न राज्यों से आए विद्वानों, शोध अध्येताओं के व्याख्यान से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है की 21वीं सदी में तकनीकी विकास के साथ साथ साइबर सुरक्षा के बढ़ते खतरे को दृष्टिगत रखते हुए शांति एवं विकास का मार्ग प्रशस्त करना होगा। 21 वीं सदी में विकास जहाँ प्राथमिक मानदण्ड था, वह अब सुरक्षा पर केन्द्रित होगा क्योंकि विकास एवं विनाश के मध्य केवल विचार आधारित व्यवस्था का अन्तर है। विकास हेतु चिन्तक जहाँ मानव हित को सर्वोपरि मानकर सार्वभौमिक विकास को महत्त्व देते हैं, वहीं विनाश के उद्‌बोधक भय पर आधारित शासन को महत्त्व देते हैं एवं अपने मनमाने

स्वार्थी विचारों से सर्वसाधारण समाज को प्रभावित करते हैं। इसी क्रम में आतंकवाद के विकास ने भी अपने विकास क्रम में उन्नति करते हुए अब अपना ध्यान पढ़े लिखे तकनीकी रूप से दक्ष  युवाओं पर केन्द्रित किया है। साइबर आतंकवाद उसी का परिशोधित रूप है। साइबर विकास ने जहाँ ग्लोब्लाइजेशन को विकसित किया है वहीं दुनियां के सभी कोनों को सेकण्डो में मिलने की शक्ति प्रदान की है। वहीं इसी के विनाश क्रम साइबर आतंकवाद ने पूरी दुनियां को एक साथ प्रभावित किया है।

वैज्ञानिक विकास के इस युग में इसका प्रभाव इतना प्रभावशाली है कि सभी बड़े विकसित राष्ट्र इससे प्रभावित हो गये है। हैकिंग, डाटा चोरी एवं उसके दुरुपयोग एवं उसके उपरान्त उसके ब्लैकमेलिंग के नये चलन से सम्पूर्ण विश्व भयाक्रान्त है। साइबर आतंकवाद के इस नये विकासक्रम में बन्द मोबाइल के नम्बरों से भी फोन करने का चलन शुरू हो गया है। जिससे गोपनीयता पर संकट आ गया है क्योंकि सुरक्षा गोपनीयता पर आधारित होती है।

आर्थिक व्यवस्था सम्पूर्ण विश्व में साइबर विकास से जुड़ गयी है। साइबर आतंकी अपने हैकरों के दम पर डाटा हैकिंग के जरिये बैंकों को प्रभावित कर कई दिनों तक कार्यबाधित कर रहे हैं। रक्षा क्षेत्र के संरक्षित आंकड़ों को भी प्रभावित करने का प्रयास चल रहा है। अतः इस कारण सम्पूर्ण विश्व के साथ भारत भी साइबर आतंकवाद से प्रभावित है। अब विश्व में कहीं भी होने वाले युद्ध 90ः प्रतिशत साइबर से प्रभावित होंगे। इस कारण साइबर आतंकवाद जैसी गम्भीर समस्या पर वृहद चिन्तन की आवश्यकता है।